IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गाँधी के स्वदेशी सम्वन्धी विचार

अंजना ठाकुर शोधार्थी

दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय ,धर्मशाला

सार:-

स्वदेशी एक प्राचीन अवधारणा है। ऐसा लगता है जब से पृथ्वी पर जीवन है तभी से स्वदेशी का भाव और व्यवहार है। स्वदेशी ही जीवन के व्यवहार की एक सहज प्रवृत्ति है। मनुष्य-समाज और प्राणी-समाज सहज ही स्वदेशी व्यवहार करते हैं। आज के युग में आत्मनिर्भर होने के लिए स्वदेशी की जरूरत फिर से महसूस होने लगी है। क्योंकि आज वही देश विकसित है जिनके यहां आवश्यकताओं के सामान खुद अपने देश में बनते हैं। भारत काफी समय तक गुलाम रहा। स्वतंत्रता तो मिली लेकिन उसे पूर्ण स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता क्योंकि आज भी विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है।भारत को आर्थिक रूप से विकसित बनाना है तो स्वदेशी का इस्तेमाल करना होगा। बीसवीं शताब्दी के ऐस विचारक हुए हैं जिनमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी प्रमुख है। दुनिया भर का अनुभव ले चुके इन विचारों को ने भारतीयों को अपने शाश्वत जीवन मूल्यों के आधार पर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया। दोनों ही विचारक स्वदेशी के पक्षधर थे।

संकेत शब्द:- स्वदेशी, आत्मनिर्भर, गुलाम, सहज प्रवृत्ति, विकसित।

प्रस्तावना:-

प्राचीन काल से भारत स्वदेशी द्वारा ही आत्मनिर्भर और श्रेष्ठ राष्ट्र बना जिसने संपूर्ण जगत में विश्व गुरु के नाते अपनी महानता सिद्ध की। भारत में जब से विदेशी कंपनी 'ईस्ट इंडिया कंपनी' आई तो उसने सारे देश को अपने अधीन कर लिया। और काफी समय तक शासन किया तभी से लेकर लोगों में लगातार स्वदेशी की भावना जागृत होने लगी। 1905 के बंग-भंग विरोधी जन जागरण से स्वदेशी को बल मिला जो 1911 तक चला। स्वदेशी आंदोलन भारत की स्वतंत्रता आंदोलन का केन्द्र बिंदु बना। स्वदेशी आंदोलन के मुख्य प्रवर्तकों में महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, रविंद्र नाथ टैगोर, अरविंद घोष आदि थे। स्वदेशी को बहुआयामी और राष्ट्रीय स्वरूप देने का श्रेय महात्मा गांधी को ही जाता है। उन्होंने स्वदेशी को न सिर्फ विदेशी

वस्तुओं के बहिष्कार और उनको जलाए जाने तक सीमित रखा बल्कि राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक पहलू पर स्वदेशी का रंग चढ़ा दिया।अक्टूबर1917 गोधरा में आयोजित पहले गुजरात प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में गांधी ने कहा कि " हमें शिकायत है कि भारत के लोग यह समझ नहीं पा रहे हैं कि स्वराज हमें स्वदेशी से ही प्राप्त होगा।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत के विकास के लिए स्वदेशी सामाजिक आर्थिक मॉडल दिया। इसके केन्द्र में व्यक्ति है। स्वतंत्रता से पहले देश में बहुत सारे आंदोलन हुए स्वदेशी को अपनाने के लिए बहुत सारी नीतियां बनाई गई। ठीक उसी समय उपाध्याय जी ने स्वदेशी को भारत की आत्मा बनाने के लिए विचार विमर्श किया और स्वदेशी को अपने जीवन दर्शन में अभिभूत कर लिया। जब हम स्वदेशी की कल्पना करते हैं तो हमारे सामने अपने देश में उत्पादित माल होता है।स्वदेशी को दीनदयाल जी ने अर्थव्यवस्था के लिए प्राणवायु कहां है। उपाध्याय जी के स्वदेशी विचार अलग थे ।

साहित्य समीक्षा:-

गोयनका ,कमल किशोर(1972) द्वारा लिखित पुस्तक 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति -दर्शन' में लेखक ने मानव कल्याण के लिए एकात्म मानववाद के रूप में मौलिक जीवन दर्शन की स्थापना की ।यह समन्वय कारी जीवन-दर्शन है। इसमें मानव जीवन के सभी पक्षों का सांमजस्य करके जीवन की समग्र सम्पन्नता एवं भव्यता का मार्ग प्रशस्त किया गया है। उपाध्याय जी का स्वदेशी के प्रति प्रेम का भी वर्णन किया गया है। वे विदेशी वस्तु के प्रयोग के लिए विशेष रुप से आग्रहशील रहते थे।

गांधी, मोहनदास करमचंद (2013), द्वारा लिखित पुस्तक 'ग्राम स्वराज्य'में लेखक ने ग्रामोद्योग, खेती-बाड़ी, बुनियादी शिक्षा, पशुपालन, स्वास्थ्य, शरीर-श्रम, समानता, संरक्षकता का सिद्धांत, स्वावलंबन, सहयोग, स्वदेशी की भावना, जैसी विभिन्न पहलुओं के संबंध में गांधी के विचारों को संग्रहित किया गया है। ग्राम- स्वराज्य गांधीजी के आजीवन शोध का परिणाम है। शोध अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण है।

त्रिपाठी, डॉ ० प्रयाग नारायण (2013) द्वारा रचित पुस्तक 'महात्मा गांधी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन में साम्य'में लेखक ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक चिंतन, विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था,कुटीर-उद्योगों को प्रोत्साहन, स्वदेशी का आग्रह आदि का वर्णन किया गया है। महात्मा गांधी और पंडित दीनदयाल जी देश की राज्य शक्ति के लिए विकेन्द्रीकरण के साथ विकेन्द्रीय अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे। उनका मानना था कि सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए स्वदेशी अर्थतंत्र को विकसित करना पड़ेगा।

कुलकर्णी, शरत अनन्त (2014) 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन एकात्म अर्थनीति' में लेखक द्वारा तीसरे विकल्प की खोज, भारतीय संस्कृति प्रणीत अर्थनीति, खेती और स्वाबलंबन, औद्योगिकरण की दिशा, स्वदेशी, मुद्रा नीति एवं अर्थ संकल्पी नीतियों इत्यादि को उजागर किया गया है। दीनदयाल जी की अर्थ नीति की दिशा को समझ लेना राष्ट्रहित की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत होता है ।

शर्मा, डॉ० महेश चंद्र (2016), 'दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण भाग में खंड- तीन' में साल 1954 एवं 1955 के दीनदयाल साहित्य का संकलन है। भारत की स्थिति के आधार पर आर्थिक पक्ष का प्रारंभ इस खंड में हुआ है। स्वदेशी की भावना हृदयंगम करनी होगी और स्वदेशी का व्यापक प्रसार करना होगा पर भी प्रकाश डाला गया है ।

सिन्हा, मनोज (2016) द्वारा रचित पुस्तक 'गांधी अध्ययन' में लेखक ने इस पुस्तक को तीन भागों में बांटा है। पहले भाग में, गांधी के विचारों की व्याख्या बताई गई है जो प्रमुखता पाश्चत्य विचारकों के अध्ययन की समीक्षा है। दूसरे भाग में, हिंद स्वराज पर चर्चा की गई है। जिसे इस पुस्तक की विशेषता कहा जा सकता है। तीसरे भाग में, गांधी के सामाजिक, आर्थिक दर्शन की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक गांधी के लेखों का संग्रह है।

उपाध्याय, दीनदयाल (2019) द्वारा कृत पुस्तक 'पोलिटिकल डायरी' पुस्तक में राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डाला गया है। उपाध्याय द्वारा विशेष रूप से भारतीय राजनीति के बारे में बताया गया है। इसमें दीनदयाल जी द्वारा आर्थिक प्रगति पर प्रकाशित साक्षात्कार में स्वदेशी सम्बन्धी विचारों की वकालत भी की गई है।

बघेल, डॉक्टर सरवन सिंह (2021) द्वारा कृत पुस्तक 'भारत की सर्वांगीण उन्नति का मंत्र अन्त्योदय'में लेखक ने अन्त्योदय भारतीय दर्शन के आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति की संकल्पना, एकात्म मानव दर्शन पर आधारित अन्त्योदय के आर्थिक विचार एवं उनके उद्देश्य और सुझाव देश की आत्मनिर्भरता, लघु कुटीर-उद्योग, स्वदेशी: भारत के विकास की एक दिशा, कौशल विकास और भारत सरकार आदि विषयों को उजागर किया गया है।

उपर्युक्त सभी अध्ययन पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और महात्मा गांधी जी के स्वदेशी सम्बन्धी विचारों से सम्बन्धित है।

शोध उद्देश्य:-

1. स्वदेशी की अवधारणा को जानना।

2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी के स्वदेशी संबंधी विचारों को उजागर करना।

शोध विधि:-

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक व वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अन्वेषक ने यहां अनुसंधान के लिए प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों द्वारा आंकड़े एकत्रित किए हैं। जिनमें, ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथ, पत्रिकाएं, शोध ग्रंथ, वेबसाइट, लेख, भाषण, किताबें इत्यादि।

स्वदेशी का अर्थ:-

संकीर्ण रूप में देखे तो स्वदेशी का अर्थ 'अपने देश में निर्मित'। और **वृहद** स्तर पर ले तो भौगोलिक क्षेत्र में उत्पन्न, निर्मित वस्तुओं, विचारों, नीतियों को स्वदेशी कहा जा सकता है। आधुनिक समय में हमें स्वदेशी प्रौद्योगिकी, संसाधनों को अपनाना चाहिए और विदेशी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए। भारत में आर्थिक विकास का एकमात्र आधार स्वदेशी है ।

राजीव दीक्षित जी के अनुसार स्वदेशी की परिभाषा "स्वदेशी वो जो प्रकृति और मनुष्य का शोषण किए बिना अपनी सनातन-वैदिक संस्कृति और सभ्यता के अनुकूल आपके स्थान के सबसे निकट किसी स्थानीय कार्य के द्वारा बनाई गई या कोई सेवा दी गई हो और जिसका पैसा स्थानीय अर्थव्यवस्था में प्रयोग होता हो वह स्वदेशी है ।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी विचार:-

दीनदयाल जी का जीवन वृत्त :-

महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय चरित्रवान, प्रखर देशभक्त, होने के साथ ही साधारण जीवन व सनातन राष्ट्र धर्मिता से संपन्न थे। गरीबों के मसीहा ,स्वदेशी के पुजारी थे। वे यथा नाम और गुणों को साकार कराने वाले भारत माता के सपूत थे।उपाध्याय जी का बाल्यकाल एक सामान्य उत्तर भारतीय निम्न मध्यवर्ती सनातनी हिंदू परिवार में गुजरा। उनका बचपन संघर्ष भरा रहा संघर्ष ने दीनदयाल उपाध्याय जी को समतावादी, एकात्मवादी, दार्शनिक बना दिया ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म धनकिया में 25 सितंबर 1916 को हुआ था । पिता का नाम भगवती प्रसाद माता का नाम रामप्यारी था।दीनदयाल जी ने पिता, माता, नाना, मामी, लघु भ्राता और नानी के मृत्यु दर्शन किए। मृत्यु ने उनके शिशु, बाल ,किशोर व युवा मन पर आघात किए। उपाध्याय जी ने प्रारंभिक शिक्षा गंगापुर के स्कूल से की। यहाँ छठी तक की शिक्षा प्राप्त की थी। उसके बाद राजस्थान कोटा से सातवीं की शिक्षा पास की। रायगढ़ से आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की। सीकर के प्रतिष्ठित कल्याण हाई स्कूल से नौवीं की कक्षा पास की। दसवीं की परीक्षा में पहला स्थान प्राप्त किया । जिसके लिए सीकर के महाराज ने उन्हें दो स्वर्ण पदक, 250 नकद और 10 रूपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की। इंटर करने के बाद बी.ए करने का मन बना लिया। कानपुर से बी .ए प्रथम स्थान से पास कर लिया। फिर अंग्रेजी में एम .ए करने का निश्चय किया। एम .ए प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। चचेरी बहन बीमार पड़ने के कारण एम .ए के अंतिम वर्ष की परीक्षा न दे सके। इस तरह उनका शिक्षा का क्रम टूट गया। जब मात्र ढाई वर्ष के थे तो पिता का देहांत हो गया। जब वह मात्र सात वर्ष के थे तो मां का देहांत हो गया।

उपाध्याय जी का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संपर्क 1937 में हुआ। जब वह पढ़ाई के लिए कानपुर गए। तब अपने सहपाठी बलवंत बालू जी महाशब्दे के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए थे। 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई।संघ के माध्यम से ही उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और भारतीय जन संघ के महामंत्री बने। जनसंघ का प्रथम अधिवेशन कानपुर में 29 - 31 दिसंबर 1952 में हुआ। वह जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त हुए। 1967 तक राष्ट्रीय महामंत्री पद पर रहे।1953 में डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु हुई तो भारत का राजनीतिक स्वरूप बदलने का दायित्व उपाध्याय जी के कंधों पर आ गया।दीनदयाल जी बड़े नेता भी बन चुके थे तो भी वह अपने को साधारण व्यक्ति की तरह ही रखते थे। कपड़े धोने तथा उनके रखरखाव का कार्य भी स्वयं करते थे। महात्मा गांधी की तरह वह सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने अपने पूरे जीवन में कभी भी कोई विदेशी चीजें न कभी खरीदी और न ही उनका उपयोग किया।11 फरवरी 1968 में रेल यात्रा के समय मुगलसराय के पास उनकी हत्या कर दी गई। विलक्षण बुद्धि, साधारण व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के भारतीय राजनीतिक क्षितिज के इस प्रकाशमान सूर्य ने भारतवर्ष में समतामूलक राजनीतिक विचारधारा का प्रचार और प्रसार करते हुए अपने प्राण राष्ट्र को समर्पित किए। उन्होंने भारतीय सनातन परंपरा को नवीनतम युग के अनुसार करने के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा को प्रस्तुत किया।

उपाध्याय जी 'ऑर्गेनाइजर' के 13 अप्रैल, 1964 के अंक में आर्थिक प्रगति पर प्रकाशित साक्षात्कार में स्वदेशी की वकालत करते हुए कहा कि "हम बहुत सारे भवन बनवा रहे हैं और हम उन्हें पूरे का पूरा सीमेंट से बनवाते हैं। हम स्थानीय रूप से तैयार की गई ईटों का प्रयोग क्यों नहीं कर सकते।उससे न केवल सीमेंट के परिवहन का रेलवे पर पड़ रहा दबाव घट जाता है बल्कि स्थानीय विकेन्द्रित ईट उद्योग को भी प्रोत्साहन मिलता है। जहाजों के निर्माण में शिपयार्ड बनवाने के स्थान पर सीधे जहाज खरीदने की वकालत की।''

उपाध्याय जी स्वदेशी की भावना कम होने पर बड़ा दुःखी हुआ करते थे। जब कभी भी उनके साथ चर्चा होती तो उन्होंने इसी भावना को बताया कि उनके विचार में भारत की भूमि में उत्पन्न हुई प्रत्येक वस्तु स्वदेशी नहीं हो सकती।भारत में बड़ी कंपनियां विदेशी कंपनियों द्वारा ही संचालित होती है। और लाभ भी विदेशों को जाता है । उपाध्याय जी इसी तरह से व्यापारिक संस्थाओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं को स्वदेशी नहीं मानते थे।

स्वदेशी का समाज में प्रचलित अर्थ:- "विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेश में निर्मित माल का उपयोग"। दीनदयाल जी उस समय के स्वदेशी के अर्थ से संतुष्ट नहीं थे। स्वदेशी की पूर्ण व्याख्या नहीं मानते थे। स्वदेशी देश के स्वाभिमान और अर्थव्यवस्था से सम्बंधित है। उपाध्याय जी स्वदेश में बनी वस्तुओं तक अपनी दृष्टि सीमित नहीं रखते थे।

दीनदयाल उपाध्याय द्वारा स्वदेशी की परिभाषा:- "मैं उन वस्तुओं को जिनका स्वदेश में निर्माण तो किया जाता है किंतु उनका सारा लाभ विदेशों को भेज दिया जाता है स्वदेशी मानने को तैयार नहीं हूं"। उनकी यह परिभाषा स्वदेश निष्ठा को प्रदर्शित करती है।स्वदेशी की परिभाषा को हमें दीनदयाल उपाध्याय के शब्दों में समझना चाहिए। उपाध्याय जी की परिभाषा में स्वदेशी उपभोग की वस्तुओं के साथ भाषा,वस्त्र के साथ पारस्परिक शिष्टाचार, लोकनीति व लोक व्यावहारिक इत्यादि सभी मनुष्य जीवन से जुड़ी बातों का समावेश है।

दीनदयाल जी ने स्वदेशी पर अपने विचार रखते हुए स्वदेशी क्या है कोई वस्तु ,कोई मंत्र इनके उत्तर को इस तरह क्रमबद्ध किया है:- "स्वदेशी कोई वस्तु नहीं एक चिंतन है, भारत के जीवन दर्शन का एक तंत्र, मंत्र है सुखी जीवन का, एक शास्त्र है युग परिवर्तन का, भारत के विकास का, समाधान है भारत की बेरोजगारी का, कवच है शोषित होने से बचने का, स्वाभिमान है श्रमशीलता का, संरक्षक है प्रकृति और पर्यावरण व जीव जंतुओं का, एक आंदोलन है सादगी और समाज का, आज संग्राम है जीवन और मरण का, आधार है समाज की सेवा का, विचार है मानवता के विकास का, उत्थान है समाज व राष्ट्र के सम्मान और स्वाभिमान का।

उपाध्याय जी का भारत के विकास के लिए स्वदेशी उद्देश्य इस प्रकार थे:-सभी क्षेत्रों एवं सभी समाजों का संतुलित विकास, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना, भारत की सुरक्षा, एकता को सुनिश्चित करना, एक आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण, प्राकृतिक संपदा का संरक्षण इत्यादि।''

दीनदयाल जी कहते थे कि " देश की समस्याओं का समाधान पाश्चात्य दर्शन का आधार लेकर नहीं किया जा सकता उसके लिए हमें अपने राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना पड़ेगा।'' इसी तरह उपाध्याय जी का स्वदेशी चिंतन था। आर्थिक व सामाजिक

विकास को स्वदेशी निष्ठा के साथ पूरा करने का सपना देखते थे। जब उन्होंने एकात्म मानव दर्शन का प्रतिपादन किया होगा उनके मन मस्तिष्क में स्वदेशी के प्रति सकारात्मक रूप रहा होगा ।

दीनदयाल जी का स्वदेशी से प्रेम:-

बाबूराव पालधिकर(कटक) उपाध्याय जी का स्वदेशी सम्बन्धी प्रेम का संस्मरण बताते है कि "मैं नागपुर संघ-कार्यालय में मैं शेविंग कर रहा था। अपने काम में व्यस्त था। किसी ने आकर मेरा शेविंग - सोप खिड़की से बाहर फेंक दिया। मुझे लगा कोई मजाक कर रहा है। गुस्से में मैंने नजर उठाकर देखा तो पंडित जी को देखकर बड़ा हैरान हुआ। पंडित जी तो कभी ऐसा काम नहीं करते आज साबुन क्यों फेंक दिया। उन्होंने स्वयं कहा भाई नाराज न होना। हम स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए अपने स्वयंसेवकों को उपदेश देते हैं। परंतु हम स्वयं उनका आचरण नहीं करेंगे तो हमारी बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा। साबुन विदेशी कंपनी का है। देशी साबुन जब मिल सकता है तब विदेशी कंपनी का बना हुआ माल क्यों व्यवहार करते हो। पंडित जी की यह बात सुनकर मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। इस प्रकार वे स्वदेशी वस्तु के प्रयोग के लिए विशेष रूप से आग्रहशील रहते थे। स्वदेशी से प्रेम करते थे।"

छोटे उद्योगों पर बल -उपाध्याय जी ने कहा "सरकार को छोटे उद्योग लगाने पर ध्यान देना चाहिए। इस बारे में उन्होंने कहा था कि हम जहाजों का निर्माण करने के लिए जहाजगाह (शिपयार्ड) बनवा रहे हैं ताकि हम अपना व्यापार चला सके। शायद इस स्तर पर हमारे लिए जहां खरीद लेना अधिक सस्ता पड़ेगा। हम अपनी न्यून पूंजी साधन को फंसा रहे है। हमारा भी नियोजन इस दृष्टि से होना चाहिए कि हमारा काम का शीघ्रता से प्रारंभ हो जाए। मेरा विचार है कि सरकार छोटे उद्योगों की ओर उतना ध्यान नहीं देती जितना देना चाहिए।"

स्वदेशी का प्रचार:-देश की आर्थिक उन्नति की भी चिंता करनी होगी। जनता की दशा को सुधारने और बेकारी को रोकने के लिए कुटीर उद्योगों को आधार मानना चाहिए। स्वदेशी का बहुत अधिक प्रसार करना होगा। लोगों को स्वदेशी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।ताकि हम विदेशी उद्योगपतियों के बराबर प्रबल मोर्चा खड़ा कर सके। कार्यकर्ताओं को इस क्षेत्र में आदर्श उपस्थित करना होगा। हमें हाथकरघे का कपड़ा उपयोग में लाना चाहिए। देशी साबुन का उपयोग, सनलाइट, लाइफबॉय ,लक्स का नहीं। हमें जरूरत की चीजें स्वदेशी और कुटीर उद्योगों से ही उपलब्ध होगी।

स्वदेशी बीते युग की प्रतिगामीपन समझी जाती है। हम विदेशों की वस्तु बहुत चाव से लेते हैं। उत्पादन प्रणाली, प्रौद्योगिकी तथा उपभोग के मानदंड, पूंजी,व्यवस्था, विचार, आदि क्षेत्रों में विदेशों पर निर्भर है। इसे उन्नति का मार्ग नहीं कह सकते हैं। इस तरह से विकास नहीं हो सकता। सभी अपने 'स्व' को विस्मृत कर परतंत्र हो जाएंगे। स्वदेशी के भावात्मक रूप को समझ कर उसे सृजन का आधार बना लेना चाहिए।

दीनदयाल जी का विचार हमेशा भारत के मजदूर, किसान, युवा और आर्थिक व सामाजिक विकास पर केन्द्रित रहा। उन्होंने समृद्ध भारत और स्वाबलंबी भारत का स्वपन देखा और उसे पूरा करने का रास्ता हमारे समक्ष रखा। हमें यह समझने की जरूरत है कि देश में अभी तक जो विकास हुआ वह स्वदेशी के आधार पर हुआ। स्वदेशी में रीति रिवाज, कृषि, भौतिक उपयोग की वस्तुएं, शिक्षा, औषधि, वेशभूषा, व्यवसाय, कार्य कौशल व न्याय व्यवस्था, कुटीर -उद्योग इत्यादि। भारत को

राजनीतिक रूप से, सामाजिक रुप से, आर्थिक रूप से, सुरक्षा, उत्पादन, विज्ञान आदि क्षेत्रों को मजबूत बनाना है तो स्वदेशी के मूल मंत्र को अपनाना पड़ेगा।

महात्मा गांधी का स्वदेशी विचार:-

गांधी जी का जीवन वृत्त :-

भारत एक ऐसी भूमि रही है जहां पर महापुरुषों ने जन्म लिया। जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कार्यों का प्रकाश भारतवर्ष में ही नहीं पूरी दुनिया में फैलाया। महात्मा गाँधी ऐसे महामानव है जिन्होंने देश को विकास एवं स्वतंत्रता की राह पर खड़ा करने एवं मानवता को नई दिशा देने वाले थे। गांधी जी भारतीय इतिहास में एक ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने देश हित के लिए अंतिम सांस तक लड़ाई लड़ी। गांधीजी मूलत: धार्मिक आध्यात्मिक व्यक्ति थे। जिन्होंने राजनीति को 'नैतिकता एवं सेवा' का क्षेत्र माना। उन्हें संतो में राजनेता और राजनेताओं में संत कहां गया। वह पूर्ण रूप में नैतिकतावादी थे।

महात्मा गांधी जी का पदार्पण 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। पिता का नाम करमचंद गांधी जो राजकोट के दीवान थे। माता का नाम पुतलीबाई था। जो धार्मिक विचारों वाली महिला थी।गांधी का विवाह 13 वर्ष में कस्तूरबा से हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुई। हाई स्कूल की शिक्षा राजकोट से हुई। 1887 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। 19 वर्ष की आयु में उन्होंने विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी की। कानून की उच्च शिक्षा इंग्लैंड से प्राप्त की। इंग्लैंड में उनका वास्तविक उद्देश्य वकालत की पढ़ाई थी न कि अंग्रेज बनना। उन्होंने इंग्लैंड में तीन वर्ष व्यतीत किए तथा कानून की शिक्षा पास की। 1892 में स्वदेश लौटे पर गांधी जी ने राजकोट तथा मुंबई में वकालत की प्रैक्टिस शुरू की। सफलता न मिली। दक्षिण अफ्रीका में अब्दुल्ला सेठ की फर्म की पैरवी के लिए 1893 में गांधी दक्षिण अफ्रीका रवाना हो गए थे।1893 से 1914 तक गांधीजी वही रहे। इसी दौरान उनके मौलिक सिद्धांतों नि :शस्त्र प्रतिरोध और सत्याग्रह की पद्धति का आविष्कार एवं प्रयोग हुआ।

भारत आकर उन्होंने 1915 में अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट पर आश्रम की स्थापना की।1917 में सबसे पहले बिहार के चंपारण जिले में सत्याग्रह का पहला प्रयोग नील की खेती करने वाले किसानों पर अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों के विरुद्ध किया गया। गांधी जी के अथक प्रयासों से भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली। 30 जनवरी 1948 को एक प्रार्थना सभा में जाते हुए उनकी मृत्यु हो गई। गाँधी जी ने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विचारों के तहत वसुदेव कुटुंबकम की भावना पर बल दिया। उन्होंने सत्य,हिंसा के सिद्धांतों के आधार पर मानवता को समाज के नव-निर्माण की नई राह दिखाई। वे वर्तमान भारत के राष्ट्र-निर्माता थे।उन्होंने स्वदेशी की धारणा अपने प्रिय ग्रंथ भगवद् गीता के स्वधर्म के आदेश से ली थी।

गांधी जी के अनुसार स्वदेशी का अर्थ:-"स्वदेश अर्थ है हमारी वह भावना जो हमें दूर का छोड़कर अपनी समीपवर्ती परिवेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है।स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के कारखानों में बनी वस्तुओं से नहीं ।स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के बेरोजगार लोगों के हाथ की बनी वस्तुओं से है। शुरू में यदि इन वस्तुओं में कोई कमी भी रहती है तो भी हमें इन्हीं वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए तथा उत्पादन करने वाले से उसमें सुधार करवाना चाहिए।ऐसा करने से बिना किसी प्रकार का समय और श्रम खर्च किए देश और देश के लोगों की सच्ची सेवा हो सकेगी।"

महात्मा गांधी ने 14 फरवरी 1916 को मद्रास में ईसाई मिशनरियों के एक सम्मेलन में अपने भाषण में स्वदेशी की परिभाषा इस प्रकार दी "स्वदेशी वह भावना है जिससे कि हम आसपास के परिवेश से ही अपनी अधिकतम आवश्यकताएं पूरी करते हैं और उनसे ही अधिकाधिक व्यवहार सम्बन्ध रखते हैं तथा स्वयं को उनका सहज अभिन्न समझते हैं न कि दूरस्थ लोगों और वस्तुओं से स्वयं को जोड़ने लगते हैं। स्वदेशी की यह भावना जब होगी तब हम अपने पूर्वजों के धर्म को ही आगे बढ़ाएंगे न कि किसी अन्य धर्म को अपनाने लगेंगे। अपने धर्म में जो वास्तविक कमी आ जाएगी उसे सुधारेगे। राजनीति में हम स्वदेशी संस्थाओं का ही उपयोग करेंगे और उनकी कोई सुस्पष्ट कमियां होगी तो उन्हें दूर करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में हम आस -पास के लोगों तथा स्वदेशी परंपरा और कौशल द्वारा उत्पादित वस्तुओं का ही उपयोग करेंगे और उन्हें ही सक्षम तथा श्रेष्ठ बनाएंगे।"

स्वदेशी के भारतीय समर्थकों का कहना था कि इंग्लैंड में जो वस्तुएं तैयार होती है वह भारत में आकर बेचते हैं जिससे हमारा सारा पैसा ब्रिटेन चला जाता है।इसके समाधान के लिए हमें भारत में ही मशीनों व मिलों की स्थापना करके उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। जिससे भारत का पैसा अपने पास ही रहेगा।भारत कैसे हमेशा विकसित रहे इसके लिए महात्मा गांधी जी ने स्वदेशी विचार को अपनाया। गांधी भारतीय अर्थव्यवस्था को भलीभांति जानते थे। छोटे और कुटीर उद्योग पतन के कगार पर थे। लोगों को रोजगार प्रदान करने के लिए स्वदेशी को अपनाने को कहा गया। स्वदेशी का प्रथम हथियार चरखा बनाया गया।वे सभी के विकास की बात करते थे। यह विकास स्वदेशी विचार द्वारा ही संभव था।

स्वदेशी को आर्थिक आधार मानते हुए गांधी जी कहते हैं गांवों का शोषण शहरों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए।छोटे उद्योगों को ब्रिटिश निर्माताओं द्वारा संरक्षित रखा जाता है वैसे ही कुटीर उद्योगो को मशीन द्वारा निर्मित चीजों के विरुद्ध संरक्षित रखना चाहिए। महात्मा गांधी की पुस्तक 'हिंद स्वराज' में भारत के आर्थिक मॉडल का वर्णन किया गया है। इसमें औपनिवेशिक शोषण को खत्म कर दिया गया। जिससे ब्रिटिश खजाने भरे जाते थे। और भारत के गरीब व्यक्ति घाटे में रहते थे। गांधी जी ने ब्रिटिश आर्थिक मॉडल की आलोचना की और स्वदेशी को अर्थशास्त्र की जरूरत कहा।

स्वदेशी को सफल बनाने के लिए खादी:- गांधी जी ने खादी को चुना और उसे लोगों तक पहुंचाने में कामयाब हुए। महात्मा गांधी जी का राष्ट्रीय आंदोलन में आने से पहले खादी व चरखा लोकप्रिय हो चुके थे। दोनों ही ब्रिटिशों की प्रतिक्रिया के विरुद्ध चलाये जा रहे थे ।स्वदेशी आंदोलन के समय मुख्य मुद्दे पर सहायता की मांग की गई जो थी । स्वदेशी मेले का आयोजन, चरखे को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाना। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, चरखा व खादी को प्रयोग करने का संकल्प लिया गया। गांधी जी ने कहा "खादी केवल वस्त्र नहीं है अपितु विचार है।" उन्होंने स्वदेशी वस्त्र अथवा खादी वस्त्र को बनाने पर जोर दिया। जो आत्मनिर्भरता का प्रतीक था।महात्मा गांधी जी द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के समय खादी को हथियार समझकर प्रयोग किया गया। गांधी जी ने जब स्वदेशी की अवधारणा को जगाया तो कुछ लोगों ने शंका जाहिर कि उनमें रविंद्र नाथ टैगोर भी एक थे। खादी को एक जरिया बनाकर स्वदेशी को सफल करने का प्रयास किया गया ।

भारत में गरीबी का कारण औद्योगिक और आर्थिक जीवन में स्वदेशी का पालन न करना है। भारत में व्यापार की वस्तुएं अगर विदेशों से नहीं लाई होती तो भारत की भूमि में शहद और दूध की नदियाँ बही होती । गांधी जी कहते है कि स्वदेशी को खोजते हुए जब मैं देश की संस्थाओं को देखता हूं तो मुझे ग्राम पंचायतें आकर्षित करती है। भारत लोकतंत्र का देश रहा है। आज तक सब मुश्किलों का सामना करता रहा। जो उस समय पर आती रही। नवाबों और राजाओं में चाहे वह भारतीय रहे

हो या फिर विदेशी उन्होंने जनता से सिर्फ कर लिया गया है। उसके बाद शायद ही जनता से उनका संपर्क रहा होगा। जनता ने राजा को कर देकर अपना सारा जीवन स्वयं अपनी इच्छा अनुसार चलाया है। स्वदेशी भावना से दूर रहने के कारण हमें बहुत सी बाधाओं से गुजरना पड़ा।

महात्मा गांधी जी का मानना है कि हम सभी अगर स्वदेशी के सिद्धांत को अपनाएं तो हमारा कर्तव्य होगा कि हम बेरोजगार पड़ोसियों को ढूंढें जो हमें आवश्यकता की चीजें दे सकते हो। अगर वे इन वस्तुओं को बनाना नहीं जानते तो उन्हें हमें उनकी प्रक्रिया सिखानी चाहिये। इस तरह से पूरा भारत एक स्वयंपूर्ण इकाई बन जाएगा। जो वस्तुएं वह खुद उत्पन्न नहीं कर सकता वह दूसरे गांव के साथ आदान- प्रदान कर सकता है। भगवत गीता में कहा है "सामान्य जन श्रेष्ठ जनों का अनुसरण करते है।" स्वदेशी को अपनाते हुए कुछ समय तक मुश्किलें भोगनी पड़ेगी। परंतु उन मुश्किलों के बाद यदि समाज के विचारशील मानव स्वदेशी को अपना लेंगे तो बहुत सारी सुविधाओं का निवारण कर सकते है। जो हमें तकलीफ देती है। कानून द्वारा व्यक्ति के जीवन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।

ऐसा माना जाता है कि भारत आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी का आचरण नहीं कर सकता। जो लोग इस तरह कहते है वे विदेशी को अनिवार्य नहीं मानते। उनके लिए देश सेवा का कार्य है। स्वदेशी के प्रति प्रेम हो तो पिन व सूई जैसी चीजों का अभाव क्योंकि वे भारत में नहीं बनती भय का कारण कार्य नहीं होना चाहिए। स्वदेशी का पालन करने वाला उसके बिना ही अपना काम चलाना सीख लेगा।जो मनुष्य स्वदेशी को असंभव कह कर छोड़ देता है वह यह भूल जाता है स्वदेशी आदर्श है जिसे निरंतर प्रयत्न द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

कहा जाता है कि स्वदेशी का विचार प्रगतिशील न होकर प्रतिगामी है मध्ययुग के तरफ ले जाता है। यह ठीक नहीं है। महात्मा गांधी जी का स्वदेशी विचार विश्व के विरुद्ध नहीं था। संकीर्ण भी नहीं था। उनका मानना था कि "मेरी भौतिक जरूरतों के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है और मेरी आध्यात्मिक जरूरतों के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है और मेरी आध्यात्मिक जरूरतों के लिए समूची दुनिया मेरा गांव है।"उनकी रणनीति अपने पड़ोसी से उत्पन्न संसाधनों के आधार पर जीवन शैली बनाने की थी।

गांधी जी ने रविंद्र नाथ टैगोर को दिए जवाब में कहा था कि "आजाद हवा में मैं भी उतना ही विश्वास रखता हूं जितना कि वह महान कवि।मैं नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों तरफ दीवारें हो और खिड़कियां बंद रहे । मैं चाहता हूं कि दुनिया भर की संस्कृतियां जितना हो सके मुक्त भाव से मेरे आंगन में फलें - फुले। लेकिन मैं यह नहीं स्वीकार करूंगा कि कोई मेरे पावों को ही उखाड़ दे।" गांधी जी की वैश्विक समज आज हमारे लिए सवार्धिक लाभदायक है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और गांधी जी का मत था कि पश्चिमी मशीनों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का प्रयोग करना विदेशियों की आर्थिक दासता को मानना है। दोनों विचारक समझ चुके थे कि सच्चा भारत कच्चे घरों और झोपड़ी में रहता है। श्रमिकों, मजदूरों, किसानों का जो स्वरोजगार है उसे तकनीकी व आर्थिक सहायता से विकसित करने की जरूरत है।

वर्तमान में स्वदेशी विचार की प्रासंगिकता:-

दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी के विचार केवल उस समय तक ही प्रासंगिक नहीं थे जब वह जीवित थे उनके विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान परिपेक्ष्य में और बढ़ गई है। किसी भी राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए स्वदेशी का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता का आभास होने लगा है। अपने देश के माल को दूसरे देश को देने से उनके आर्थिक विकास में बढ़ोतरी होगी और अपना देश पीछे चलता जाएगा। हमें यह मालूम है कि प्राचीन काल में भारत आत्मनिर्भर था। आज देश को स्वदेशी की बहुत आवश्यकता है। गांधी जी कहते थे कि हम ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें गरीव व्यक्ति भी अनुभव करें कि भारत उनका अपना देश है। उनके चिंतन में स्वदेशी का भाव प्रचलित हो। स्वदेशी को अपनाने से हम काफी सशक्त होंगे। देश, शहर, भी आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाएंगे।पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और महात्मा गांधी दोनों ही स्वदेशी को बढ़ावा देते थे ।गांवों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से विकसित करने के पक्षधर थे। वे गांवों की सम्पन्नता को ही भारत की सम्पन्नता मानते है। स्वदेशी से सम्बन्धित उनकी अवधारणा वर्तमान परिस्थितियों कोविड-19 जैसी विश्वव्यापी महामारी के दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई है।

निष्कर्ष:-

स्वदेशी की अवधारणा भारत की आर्थिक स्थिति को दूर करने की दृष्टि से प्रभावकारी है। भारत की स्वतंत्रता के दौरान स्वदेशी अंग्रेजों के विरुद्ध एक साधन बन गया था। स्वदेशी की भावना हमें अपनी संस्कृति व परंपरा की ओर वापिस जाने के लिए प्रेरित करती है। स्वदेशी नई चेतना को जगाती है । स्वदेशी मनुष्य को लाभ देने का आर्थिक व राजनीतिक कार्यक्रम है। जो मानवीय समानता पर आधारित है। वास्तव में स्वदेशी ऐसा सिद्धांत है जिसमें मानवता व प्रेम समाहित है। वर्तमान सरकार द्वारा भी इस पर प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है। भारत आज विश्व के अग्रणी देशों में गिना जाता है। ऐसे में भारत में स्वदेशी के आधार पर आर्थिक विकास ही एकमात्र रास्ता है ऐसा मॉडल बनाना चाहिए जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, नगर, राज्य और देश की आवश्यकताओं को सामने रखा जा सके। सबके बारे में विचार-विमर्श हो सके। स्वदेशी और सर्वस्पर्शी मॉडल के माध्यम से ही हम विश्व के सामने एक संपन्न राष्ट्र स्थापित हो सके। कोई बेसहारा और मजदूर नहीं होगा। भारत आत्मनिर्भर होकर विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगा ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

पुस्तकें व भाषण

1. सिहं , अमरजीत . (2019). एकात्म मानववाद के दीनदयाल उपाध्याय . नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैकस .पृ० -254.

2. कुलकर्णी, शरद आनंद. (2014)पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन एकात्म अर्थनीति भाग- 4. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन. पृ०-94.

3. गांधी, मोहनदास करमचंद. (2013). ग्राम स्वराज्य. दिल्ली: डायमंड बुक्स.पृ० – 67.

4. गोयंनका, कमल किशोर. (1972). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति - दर्शन. नई दिल्ली: दीनदयाल शोध संस्थान.पृ० -209.

4. गोयंनका, कमल किशोर. (1972). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति - दर्शन. नई दिल्ली: दीनदयाल शोध संस्थान.पृ० -209.

6. धर्मपाल, (2002). स्वदेशी और भारतीयता. महाराष्ट्र: भारत पीठम. पृ०-9

7.बघेल, डॉ० सरवन जी.(2021). भारत की सर्वांगीण उन्नति का मंत्र. दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.पृ०-120.

8 .शर्मा, डॉ० महेश चंद्र. (2016). दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांग्मयी खंड तीन . दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.पृ० – 47.

9. सिन्हा, मनोज.(2016). गांधी अध्ययन. दिल्ली: ओरियंट ब्लैकस्वान.पृ० -199.

10 .त्रिपाठी, डॉ० प्रयाग नारायण. (2013). महात्मा गांधी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन में साम्य. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन. पृ०- 35.

11.महात्मा गाँधी का मद्रास में 'स्वदेशी' पर भाषण ,14 फरवरी 1916

वेबसाइट:-

www.questjournals.org

https://journals.ijarms.org

https://www.scribd.com

https://www.exoticindiaart.com

https://studyhotspot.com